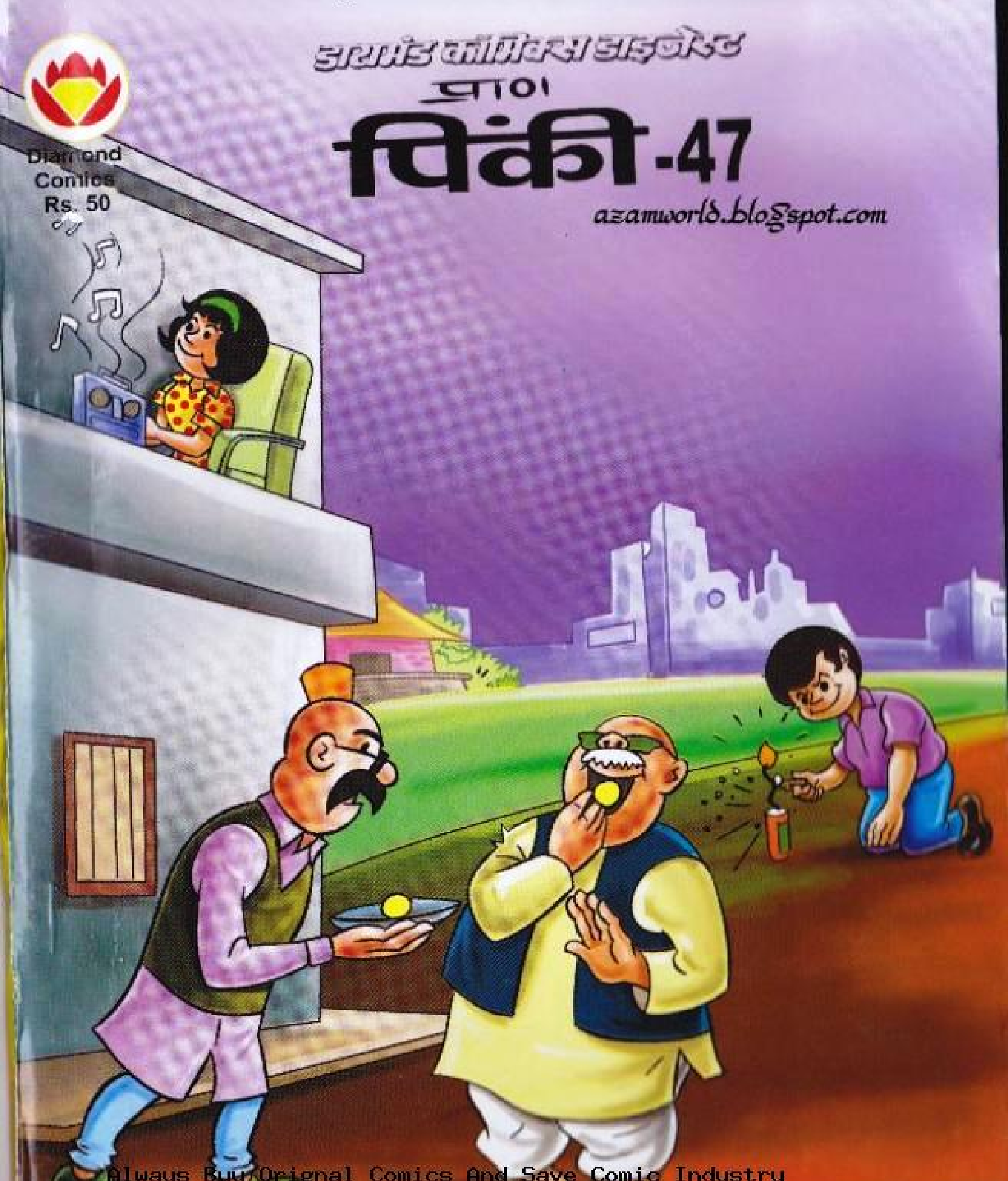

डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट
प्राण
पिंकी-47
azamworld.blogspot.com
Diamond Comics
Rs. 50





Editor : Gulshan Rai


ठीक है, बिन्नी! एक ले लो.
वाह! लड्डू स्वादिष्ट हैं.
तीन बच गये. मेरे लिए अब भी काफी हैं.
झपटू! मुझसे मिठाई क्यों छुपा रहे हो?
मां, तुम?
बेटा! जब तू छोटा था, तब मैं तुझे दूध पिलाती थी. क्या तू मुझे एक लड्डू नहीं दे सकता?


लो, मां!
शाबाश! मुझे पता था मेरा झपटू कभी इन्कार नहीं करेगा.
बेटे की शादी के बाद आज मिठाई खाने को मिली है.
अब दो रह गये. मेरे लिए अब भी काफी हैं.
बेटा झपटू! मैंने तुझे लिखाया पढ़ाया. क्या पिता को एक लड्डू नहीं खिलाएगा?
वाह! लड्डू नर्म और देसी घी का है.
अब एक रह गया.


हूँ?? पिंकी इधर आ रही है. वह मेरा बचा हुआ एक लड्डू खा जायेगी.
मैं इसको मेज पर रखता हूँ और लड़की को दरवाजे से टरका देता हूँ.
देखो, पिंकी! इस वक्त मैं जरूरी काम में व्यस्त हूँ. तुम यहां से चली जाओ तो बेहतर है.
अंकल! मैं सिर्फ यह कहने आयी थी कि अपनी सारी खिड़कियां बंद रखो. मोहल्ले में एक बिल्ली आयी है जो मिठाई खाने की शौकीन है.
मेरा लड्डू!


कांस्टेबल की तरक्की
कांस्टेबल डंडादीन! उदास क्यों हो?
पिंकी! एक उलझन में पड़ा हूँ.
मेरी सैंचुरी नहीं बन रही.
क्या पुलिस की नौकरी छोड़कर क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया है?
नहीं! मैं 99 चोर पकड़ चुका हूँ. एक और हाथ लग जाये तो पूरी सैंचुरी बन जायेगी.
क्या उससे कुछ फायदा होगा?
बहुत!
मेरी तरक्की होगी और मैं सीनियर कांस्टेबल बन जाऊंगा. तब दो सौ रुपया महीना मेरी तनख्वाह बढ़ेगी.
© PRAN'S FEATURES


एक चोर को मैंने देखा है.
कहाँ ? -- जल्दी बताओ !
पहले मुझे आइसक्रीम खिलाओ, फिर बताऊंगी.
वह किस बात की ?
क्यों ? तुम्हारी तरक्की होगी, तनख्वाह बढ़ेगी. क्या कुछ पैसे आइसक्रीम पर खर्च नहीं कर सकते ?
अच्छा, आओ !
अरे भई ! एक आइसक्रीम देना.


आओ, मेरे साथ !
अभी कितनी दूर है चोर ?
थोड़ी दूर.
उस मकान के पास है वह.
वह? बच्चों के खेल का चोर ?


ढोलू और स्कूल
ढोलू! तुम स्कूल जा रहे हो? तुम हमेशा पढ़ने लिखने से कतराते रहे.
आज मैंने सोचा मां बाप को खुश किया जाये. इसलिए मैं बस्ता लेकर स्कूल को चल पड़ा.
वर्ना मैं 365 दिनों में एक बार भी स्कूल नहीं गया.
मुझे स्कूल की बजाय वीडियो गेम्स और टी.वी. देखना ज्यादा पसंद है.
फिर तो आज तुम्हें गणित के प्रश्न हल करते वक्त बड़ी परेशानी होगी?
किताब किसने खोलनी है? आज इतवार है, स्कूल की छुट्टी का दिन.
© PRAN'S FEATURES


अच्छा, चलता हूं, मुझे देर हो रही है.
घर वापस लौटकर मुझे कार्टून फिल्म देखनी है.
स्कूल
मैडम आप? इतवार को आप क्लास रूम में क्या कर रही हैं?
पढ़ाई में कमजोर स्टूडेंट्स के लिए आज स्पेशल क्लास ले रही हूं. ढोलू! तुम भी किताब खोलो.


दादाजी का चश्मा
दादाजी! क्या ढूंढ रहे हैं?
जुराबें नहीं मिल रहीं.
वह तो आपने पहन रखी हैं.
मगर दो अलग किस्मों की. अगर दूसरा जोड़ा मिल जावे तो मैं जुराबों का मैच करके पहन सकता हूं.
© PRAN'S FEATURES


मैं जुराबें ढूंढने में मदद करूं?
मैंने कमरे का कोना-कोना छान मारा. मगर वे नहीं मिलीं.
कोई और तरकीब सोची जावे.
क्या?
एक मिनट ठहरो. मैं अभी आयी.


ये गम बूट पहन लो. पता नहीं चलेगा कि इनके अंदर आपने दो अलग-अलग जुराबें पहन रखी हैं.
तरकीब कामयाब रही.
अब आप चलकर देखो.
ओह!
फिसलना!
मेरे चश्मे का एक शीशा टूट गया.


अब मैं कैसे देख सकूंगा?
इसका भी उपाय है.
देखो मैं जिस तरफ का शीशा टूटा है उस तरफ की आंख पर पट्टी बांध देती हूं.
अब आपकी एक आंख और एक ही शीशे का चश्मा. हिसाब बराबर!


पिंकी और तितली
—प्राण
पिंकी! देखो! तुम्हारे सिर पर कितनी खूबसूरत तितली बैठी है?
मैं उसे पकड़ती हूं.
हा! हा!! वह उड़ गयी.
उधर गयी वह!


पकड़ो!
तितली फूल पर बैठ गयी है.
मैं उसे पकड़ने जाती हूं.
उधर मत जाना. वहां कुत्ता बैठा है.
तितली को खबर नहीं है कि कुत्ता उसे खाने आ रहा है.
मैं तितली को बचाने जा रही हूं.
उधर मत जाना. कुत्ता तुम्हें काट लेगा.


यह पत्थर काम आयेगा.
धप प!
तितली उड़ गयी!
वह बच गयी!
बाऊ! बाऊ!
उसे पकड़ो!
इस बार वह तालाब के फूल पर बैठी है.


मैं वहां जाकर उसे पकड़ लेती हूं.
ज्यादा गहरे पानी में न जाना.
एक क्षण बाद वह मेरे हाथ में होगी.
आऊ ऊ!
छलांग!
हा! हा!! वह फिर निकल गयी.
वह जा रही है.


उफ़ फ! भागते हुए मेरी सांस फूल गयी है.
चम्पू! घर आ गया है. क्यों न हम दूध पीकर ताज़ा दम हो जायें? फिर तितली को पकड़ेंगे.
बच्चो! दूध का वक्त हो गया है.
देखो! वही तितली हमारे घर आ गयी है.
वह फूलों की माला पर बैठ गयी है.
मैं उसे मर्तबान में बंद कर देती हूँ.
धप प प!
वह पकड़ी गयी!
तितली नीचे गिर पड़ी.
ऐसा क्यों हुआ?

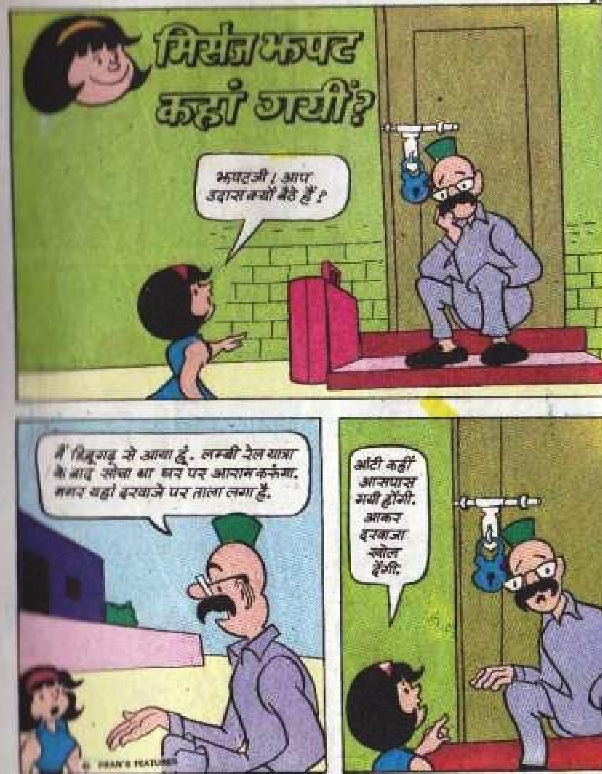

दीदी ! वह तितली बिलकुल क्यों नहीं रही?
हर प्राणी को जिन्दा रहने के लिए ऑक्सीजन की जरूरत होती है.
मर्तबान में दम घुटने से शायद वह मर गयी.
हमारा इरादा तितली को मारने का नहीं था.
मर्तबान से बाहर निकालकर इसको नदी में बहा आयें.
अरे ? वह तो उड़ गयी !
वह जिन्दा थी.


नाना की चिट्ठी
पोस्टमैन!
नानी ! तुम्हारी चिट्ठी आयी है.
तुम्हारे नानाजी ने लिखी होगी. वह कानपुर गये हैं.
तब तो नानाजी ने इस चिट्ठी में मेरे बारे में भी कुछ लिखा होगा ! क्या लिखा है उन्होंने ?
अभी पढ़ती हूं. पहले चश्मा ढूंढना पड़ेगा.


मेज के दोनों दराजों में चश्मा नहीं है.
अलमारी में भी वह नहीं है.
तकिये के नीचे भी वह नहीं है.
पता नहीं मैं चश्मा कहां रखकर भूल गयी ?
नानी ! मिसेज जानकी के पास एक चश्मा है. मैं वह मांगकर लाती हूं.


मेरा इन्तजार करो.
पता नहीं मेरी याददाश्त को क्या हो गया है? मैं चीज रखकर भूल जाती हूं.
लो, मैं चश्मा ले आयी. अब पोस्टकार्ड पढ़ो.
मेरे घर में दूरबीन रखी है. उसे ले आऊं?
नहीं! दूरबीन से दूर की चीजें देखी जाती हैं.


मैडम! मैं क्लीयर-विज़न ऑप्टीकल कम्पनी से आया हूं. क्या मैं अंदर आ सकता हूं?
आइए.
कुछ दिन पहले आप फ्रेम बदलने के लिए अपना चश्मा हमें दे गयी थीं. मैं वह देने आया हूं.
चश्मा आ गया! अब चिट्ठी पढ़ो!
अब मैं भूल गयी हूं कि वह चिट्ठी मैंने कहां रख दी?


मिसेज़ झपट कहां गयीं?
झपटजी! आप उदास क्यों बैठे हैं?
मैं डिब्रूगढ़ से आया हूं. लम्बी रेल यात्रा के बाद सोचा था घर पर आराम करूंगा. मगर यहां दरवाजे पर ताला लगा है.
आंटी कहीं आसपास गयी होंगी. आकर दरवाजा खोल देंगी.
© PRAN'S FEATURES


पता नहीं वह कब तक लौटेगी ?
मैं मिसेज कुलकर्णी के घर जाकर देखती हूं, कहीं वह वहां तो नहीं बैठी ?
अगर मेरी पत्नी वहां न मिली तो ?
तो मैं ब्लॉक के सारे घरों में देखूंगी.
आप इंतजार करो. मैं आंटी को ढूंढकर लाती हूं.
मिसेज कुलकर्णी! क्या मिसेज झपट आपके यहां हैं ?
नहीं, पिंकी!
मुझे आगे जाना चाहिए.


एक सप्ताह से मैं उससे नहीं मिली.
मिसेज चटर्जी! क्या मिसेज झपट आपके साथ बैठी हैं ?
नहीं, पिंकी!
अंकल! इधर आइए. आपके घर के पीछे की खिड़की खुली है.


आप पीछे की खिड़की से घर में प्रवेश कर सकते हैं।
धन्यवाद, पिंकी!
धड़ाक!
अरे आप? मेरे पतिदेव?... मैंने समझा कि कोई चोर है जो पीछे की खिड़की से घर में घुस आया है।
मैं दोपहर की नींद सोना चाहती थी. घर घर जाकर सामान बेचने वाले सेल्समैन मुझे डिस्टर्ब न करें, इसलिए मैं बाहर से ताला लगाकर पीछे के दरवाजे से अंदर आ गयी. ताला लगा देखकर कोई सेल्समैन दरवाजा नहीं खटखटायेगा.


नटखट कुटकुट
कुटकुट! रुको!
वहाँ मत जाओ!
चलो, बाहर निकलो! इस का तेल हानिकारक है।
मोबिल ऑयल
मोबिल ऑयल
© PRAN'S FEATURES

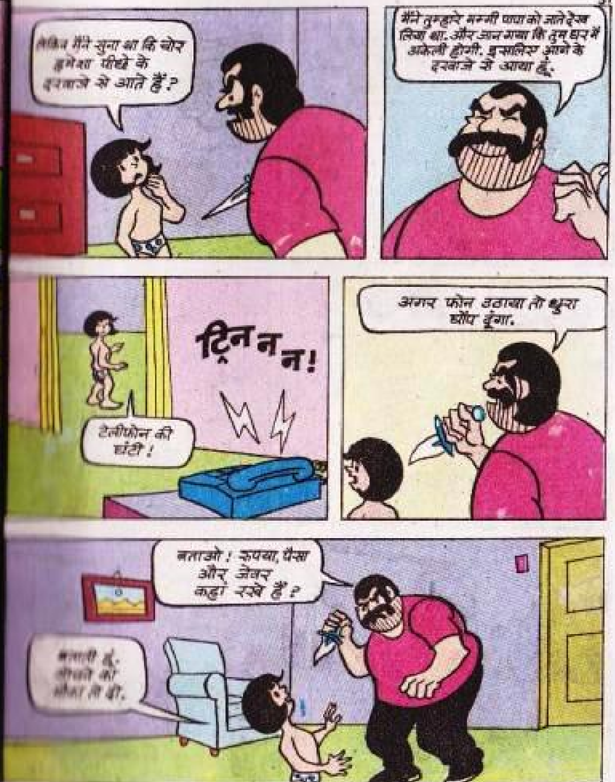

सत्यानाश! तुम मोबिल ऑयल में लथपथ हो गयीं।
हंस रही हो? शैतान कहीं की!
ही!ही!ही!
रुको! ज्यादा तेज न दौड़ो. मोबिल ऑयल से फिसल जाओगी.
झपटजी नमस्ते! क्या आप मेरी कुटकुट से दोस्ती करेंगे?
ना बाबा! गिलहरी से तेल टपक रहा है.
पिंकी! इसे मुझसे दूर रखो. अगर इसने मुझे छू लिया तो मेरे कपड़ों पर दाग पड़ जायेंगे.


इससे पहले कि गिलहरी मेरे करीब आये, मुझे नाइन-टू इलेवन हो जाना चाहिए.
देखा? कोई तुम्हें पास नहीं आने देना चाहता.
पिंकी! तुम आ गयीं - तुम उदास क्यों हो?
दादाजी! हर कोई मेरी कुटकुट से नफरत करता है. उसे अपने पास नहीं आने देता.
मेरे दोस्त पशुबन्धु जानवरों से प्यार करते हैं. वह तुम्हारी गिलहरी को अपनी गोद में बैठायेंगे.


अंकल ! क्या सचमुच आप मेरी गिलहरी को गोद में बैठाएंगे ?
क्यों नहीं ? मैं हर रोज अपने पालतू कुत्ते और बिल्ली को गोद में बैठाकर दूध पिलाता हूं.
तब तो ठीक है.
कुटकुद ! आओ ! अंकल तुमसे दोस्ती करना चाहते हैं.
ओह ह !
धप प प !
तेल से लथपथ गिलहरी ने मेरे कपड़े खराब कर दिये !
विशम्बर दास ! आज से हमारी दोस्ती खत्म ! अब मैं कभी तुम्हारे घर नहीं आऊंगा.


पिंकी और चोर
बेटी ! हम काम से बाहर जा रहे हैं.
कब लौटोगी, मम्मी ?
देर से.
आप बेफिक्र रहें, पापा !
बाय ! पापा मम्मी !
© PRAN'S FEATURES


पापा ने कहा था कि नहाना मत भूलना. मुझे स्नान कर लेना चाहिए.
डिंग!
डांग!!
जब भी नहाने लगती हूं, दरवाजे या टेलीफोन की घंटी बज उठती है.
डिंग! डांग!!
अरे भई, सब्र करो. दरवाजा खोलती हूं.
आप कौन?
चोर!


लेकिन मैंने सुना था कि चोर हमेशा पीछे के दरवाजे से आते हैं?
मैंने तुम्हारे मम्मी पापा को जाते देख लिया था. और जान गया कि तुम घर में अकेली होगी. इसलिए आगे के दरवाजे से आया हूं.
ट्रिन न न!
टेलीफोन की घंटी!
अगर फोन उठाया तो छुरा घोंप दूंगा.
बताओ! रुपया, पैसा और जेवर कहां रखे हैं?


सारे जेवरात और नकदी तिजोरी में रखे हैं. तिजोरी की चाबी मेरी फ्राक की जेब में है और फ्राक बाथरूम में है.
ठीक है. बाथरूम खोलकर मैं तुम्हारी फ्राक से तिजोरी की चाबी निकाल लेता
धैं धा र!
हवलदार डंडाप्रसाद! वह रहा चोर.


दीदी की पढ़ाई
दीदी! क्यों न आज हम कैरम बोर्ड खेलें?
मैं जब टेबल्स याद करती हूं, तो सारे मोहल्ले को पता चल जाता है.
मैं ऊंचे स्वर में कहती हूं- दो एकम-दो!--- दो दूनी-चार!--- तीन दूनी-छह!--
© PRAN'S FEATURES


बस ! बस !! टेबल्स की बात दूसरी है. ऊंची आवाज में किताब नहीं पढ़ी जाती.
क्यों ? पंडितजी रामायण ऊंची आवाज में पढ़ते हैं. और भक्त सुनते हैं.
खामोश हो जाओ ! मुझे चुपचाप पढ़ना पसंद है.
क्यों ? पापा जब अखबार पढ़ते हैं तो बीच में मम्मी से बातें भी करते हैं और चाय भी पीते हैं.
उफ़ फ़ ! मैं किताब पढ़ रही हूं, न कि समाचारपत्र.
कौन सी किताब ?
भूगोल.
उसमें क्या लिखा रहता है ?
पृथ्वी, पहाड़, नदी और मौसम के बारे में.


दीदी ! आंधी कब आती है ?
जब पिंकी आती है.
दीदी ! कहां जा रही हो ?
मैं आंधी से भागकर जा रही हूं.
मिसेज़ सनाढ्य का घर आ गया.


दरवाजा खोलकर अंदर आना चाहिए.
हॉस्टल से बच्चे छुट्टियां मनाने आये हैं. इन्हें रॉक म्यूज़िक पसंद है.
ROCK
दीदी! वापस क्यों लौट आयीं?
वहां भूचाल आया हुआ है.


गोबलन का गुस्सा
ओह! मेरे अखरोट!
धड़ाक!
पिंकी! तुम्हारी कुटकुट मेरे अखरोट खा गयी. मैं हर्जाना वसूल करूंगा.
© PRAN'S FEATURES


मोटलन! एक बार तुम्हारी भैंस हमारे लॉन में घुसकर घास चर गयी थी. क्या तुमने हर्जाना दिया था?
किस बात का हर्जाना? घास तो चरने के लिए होती है.
उसी तरह अखरोट खाने के लिए होते हैं. कुटकुट ने खा लिए तो क्या हुआ?
मैं उस गिलहरी को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि वह चलने के काबिल नहीं रहेगी.
दूसरे दिन.
गिलहरी को लुभाने के लिए पिंजरे में अखरोट रख देता हूं.


खटाक क!
अहा! पकड़ी गयी!
अब मैं जाकर पिंकी को देखता हूं. वह कैसे हर्जाने के पैसे नहीं देती?


मीकू! क्या तुमने मेरी कुटकुट को देखा है?
नहीं, पिंकी!
आंटी राव! क्या आपने कुटकुट को देखा है?
नहीं!
हो!हो!! लड़की! मैं जानता हूं, तुम्हारी परेशानी का कारण. गिलहरी मेरे कब्जे में है. मेरे अखरोटों का मूल्य दस रुपये दो और कुटकुट को ले जाओ.
अगर मैं पैसे न दूं तो?
तो मैं गिलहरी को बेच दूंगा.
मैं उसे खरीदने को तैयार हूं. यह लो दस रुपये. मैं गिलहरी की खाल से अपने जूते बनवाऊंगा.


मैं तुम्हें वह गिलहरी दूं.
हैं? पिंजरा खाली?
हटो! मैं बताती हूं.
पिंजरे में तल नहीं था. गिलहरी ने अपने तेज दांतों से मेज की लकड़ी काटी और निकल गयी.
कुटकुट! आओ चलें.


नानी की तस्वीर
नानी मां! लगता है, आज तुम काम में बड़ी व्यस्त हो.
नहीं पिंकी! यूं ही कुछ पुरानी यादें ताज़ा हो गई हैं.
अब तो केवल यादें रह गई हैं. वे भी क्या दिन थे?
नानी मां! फोटो में तुम्हारे साथ यह कौन खड़ा है?
मैं अलमारी साफ कर रही थी कि मुझे अपनी फोटो मिल गई. बस उसे देखने लगी.
जरा दिखाना मैं भी देखूं उसे.
तब तुम पैदा भी नहीं हुई थीं जब वह इस दुनिया से चले गए.
तुमने नानाजी से कभी मुलाकात नहीं करवाई?
नानी मां! यह तो तुम्हारी फोटो नहीं है. किसी दूसरी महिला की है.
तुम्हारे बाल तो सफेद हैं और आंखों पर मोटा चश्मा चढ़ा है.
यह मेरी शादी के समय पहले की फोटो है. तब मैं ऐसी थी.
फ्रेम करवाने बाजार कौन ले जाएगा? मुझ से तो रास्ता तय नहीं होता.
फ्रेम करवाने तुम्हें मैं ले जाऊंगी.
मुझे डर है कि कहीं रास्ते में तुम इसे खो न दो? यह फोटो मेरे पास आखिरी निशानी है. मेरे लिए यह बहुत मूल्यवान है.


यकीन रखो मैं इसे सम्भाल कर ले आऊंगी और नानी, मियां फ्रेम वाले से इसे मढ़वा लाऊंगी.
ठीक है. यह लो पैसे.
मैं आज एक अच्छा काम करने जा रही हूं.
पिंकी! आज तो तुम्हारे पास पैसे हैं. प्लेग्राउंड पर सर्कस लगी है. इन पैसों से दो टिकिट आ जाएंगे.
नहीं, चीकू! यह पैसे फोटो की फ्रेम बनवाने के लिए हैं.
किसका फोटो?
देखकर पहचानो? किसका हो सकता है!
मुझे तो यह फोटो फिल्म स्टार रेखा का लगता है.
तो उसके साथ जो खड़ा है, वह राजेश खन्ना होना चाहिए?
यह फोटो मेरी नानी और नाना जी का है--- लाओ, इसे इधर दो.


ओह! फोटो गिर गया!
घबराना नहीं, मैं अभी उठा लेती हूं.
ओह! हवा के झोंके से वह उड़ गया!
नानी का फोटो! वह दूर उड़ता चला जा रहा है. अगर वह खो गया तो मुश्किल हो जाएगी. नानी कहती थी कि उस फोटो के साथ उनकी पुरानी यादें जुड़ी हैं.
वह फोटो उसकी सब्जी की टोकरी में जा गिरा है.
मिनिस्टर
वह आदमी तो उस बंगले में घुस गया.


वह आदमी लौट आया.
तुम्हारी सब्जियों की टोकरी में मेरी नानी का फोटो था.
वह टोकरी तो मैं मिनिस्टर साहब को भेंट कर आया.
मुझे मिनिस्टर से मिलना है.
क्या स्कूल में फेल हो गई हो या नम्बर बढ़वाने हैं?
नहीं! मुझे फोटो के बारे में उनसे मिलना है.
अच्छा, तो तुम उनके साथ खड़े होकर फोटो खिंचवाना चाहती हो?
नहीं! मिनिस्टर के पास जो सब्जियों की टोकरी गई है, उसमें मेरी नानी का फोटो है. मुझे वह लेना है.
तो पहले क्यों नहीं बताया? आओ अंदर.


बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं, वे देश के भावी नेता हैं.
मैं आपका भाषण सुनने नहीं, सब्जी की टोकरी देखने आई हूँ.
वह तो रसोइया किचन में ले गया.
रुको! वह फोटो भट्टी में न डालना वह मेरी नानी की अमूल्य यादगार है.
शुक्र है, फोटो बच गया! अब बिना देर किए मुझे रहीम मियां फ्रेम वाले के पास पहुंचना चाहिए.


पिक्चर फ्रेम वाला
रहीम मियां! मेरी नानी का फोटो फ्रेम करने का क्या लोगे?
अगर बिना माउंट के फ्रेम करवाओगी तो दस रुपए, माउंट के साथ पंद्रह.
माउंट के साथ बना दो.
ठीक है, कल आकर ले जाना.
क्या फोटो का फ्रेम अभी नहीं बन सकता?
ठीक है, वहां दूर बैठ जाओ, जब तस्वीर तैयार हो जाएगी, मैं तुम्हें बुला लूंगा.
दूर क्यों?
वह इसलिए कि अगर तुम मेरे करीब बैठीं तो कोई शीशा टूट जाएगा, समझीं?
पता नहीं यह रहीम मियां इतने गर्म मिजाज क्यों हैं?
रहीम मियां! क्या तस्वीर तैयार हो गई?
अगर तुम चुप नहीं रहोगी तो यह तस्वीर कभी तैयार नहीं होगी.
लो, तस्वीर तैयार है.
रहीम मियां! तुम कितने अच्छे हो.
पर यह तो मेरी नानी की तस्वीर नहीं है?
तुम जल्दी में दूसरी तस्वीर उठा ली तो इसमें मेरा क्या कसूर? लो इधर दो. यह रही तुम्हारी तस्वीर.
नानी मां! मैं तस्वीर मढ़वा लाई!
सच?
पिंकी! इस दीवार पर यह तस्वीर कैसी रहेगी?
बहुत खूबसूरत!


संगीतज्ञ
आज संगीत का अभ्यास किया जाए
हू ऽ हू ऽ (रोना)
हू ऽ
देखूं साथ वाले कमरे में कौन रो रहा है?
हू ऽ ऽ
हू ऽ
भीखू, क्यों रो रहे हो?


संगीत को सुन कर
नहीं आएगा
और क्या आएगा?
क्या मेरा गाना इतना बुरा है?
देख लो, मेरे सारे साथी भी रो रहे हैं.
तुम्हारे साथियों में कम से कम तुम्हारी
में बैठा हुआ एक ऐसा है जिसे मेरा गाना
आया. देखो वह मुस्करा रहा है.
वह बहरा है.
© PRAN'S FEATURES


पगड़ी
पगड़ीदास तू मुझे हमेशा चिढ़ा भाग जाता है. आ इस घड़ी से तेरा सिर फोड़
पिंकी, तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती.
तेरी यह हिम्मत? ठहर अभी मजा चखाती हूं.
PRAN'S FEATU
ताड़!
अरे, घड़ी टूट गई!


कोई बात नहीं. मैं इस लाठी से तुम्हारा सिर तोड़ती हूं.
यह भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी.
फटाक!
हैं??? यह भी टूट गई?
पगड़ीदास, बता इसका राज क्या है?
अभी बताता हूं.
मैंने पगड़ी के नीचे लोहे का हैलमेट पहना हुआ है.


चाकलेट कहां गए?
मम्मी शापिंग करके लौट रही हैं. जरूर कोई खाने की चीज लाई होंगी.
वैसे तो वह मुझे देंगी नहीं. कोई ट्रिक से काम लेना चाहिए
ये चाकलेट इस मेज पर रख दूं.
और यह कस्टर्ड पाऊडर? इसे भी मेज पर रख देती हूं.
अरे, चाकलेट कहां गए?
बिल्ली उन्हें
होगी.
टामी, देखो चाकलेट कोई बिल्ली ले गई हैं. उसे ढूंढो.
भौं! भौं!
टामी ?
मेरा फ्राक छोड़ो, टामी!
अच्छा तो यह रही बिल्ली.
© PRAN'S FEATU


टेबल टेनिस
चंपू, आओ टेबल-टेनिस खेलें.
लो सम्भालो मेरी सर्विस.
ताड़!
© PRAN'S FEATURES


मेरी गेंद!
चंपू, तैयार हो जाओ. फिर से खेल शुरू होता है.
अरे अण्डा?


सस्ती पत्रिकाएं
घंटी
अरे दरवाजे पर कौन है?
घंटी
नमस्ते. मैं मनोरंजन से भरपूर पत्रिकाएं बेच रहा हूं. इनमें पराग, लोटपोट, नंदन, वगैरह हैं.
चूंकि आज मेरा जन्मदिन है, इस लिए सारी पत्रिकाओं पर पचास प्रतिशत डिस्काउंट दे रहा हूं.
ऐसी बात है? तो फिर दे दो सात-आठ पत्रिकाएं.
कितने पैसे हुए इन सबके?
सिर्फ छः रुपए
देखो मम्मी, मैंने पचास प्रतिशत डिस्काउंट पर कितनी सारी पत्रिकाएं खरीदीं.
अच्छा? जरा मैं भी देखूं.
© PRAN'S FEATURES
धर्मयुग- 20 नवम्बर 1966, लोटपोट-अंक 307, पराग- मार्च 1974, मायापुरी-अंक 185, मनोहर कहानियां- अगस्त 1965...


अंकलजी की मदद
लो, मुसीबत आ गई
अंकलजी, क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूं ?
अगर तुम मेरी मदद करना चाहती हो तो यहां से चली जाओ.
यह मदद का कौन सा तरीका है ?
तुम जितनी देर यहां खड़ी रहोगी मेरा दिमाग चाटती रहोगी और मेरा काम रुका रहेगा
लो, मैं चुप खड़ी रहती हूं


फिर भी मुझे डर है कि कहीं तुम ठोकर मार कर रंग न गिरा दो या कोई और नुकसान न कर दो .
लो, मैं दूर उस कुर्सी पर बैठ जाती हूं .
ओह ! तुमने यह क्या कर दिया ?
क्यों ?
© PRAN'S FEATURES
इस कुर्सी को मैंने अभी पेन्ट किया है. उसका रंग अभी गीला है .
ओह ! मेरा फ्राक !


नया सितारा
अरे पंपू, उदास क्यों हो?
उस मकान में एक बूढ़ा वैज्ञानिक गैलीलियो रहता है. वह दिन रात आसमान में नये नये सितारों की खोज करता रहता है...
उसने प्रण कर रखा है कि वह जब तक नया सितारा न खोज लेगा, खाना न खायेगा. वह दस दिन से भूखा है. कहीं मर न जाये.
जाओ, उससे कहो कि अपना टेलिस्कोप दूसरी खिड़की पर ले जाये. सितारा जरूर मिलेगा.
गैलीलियो बाबा, क्या आप अपना टेलिस्कोप उधर वाली खिड़की पर नहीं ले जा सकते?


चलो, उधर चलो. हमने तो पूरा आसमान छान लिया है.
अहा! मिल गया!!
...एक बिलकुल नया सितारा!
अब मैं चैन से रोटी खा सकता हूं.
धन्यवाद, पिंकी.


चश्मा
पिंकी, मेज से दूर हट जाओ. मेरी कोई चीज टूट जायेगी.
पापा, आप बेफिक्र रहो.
तड़िक!
देखा, तुमने मेरा चश्मा तोड़ दिया न!


पापा, मैं आप का नुकसान पूरा कर दूंगी.
कैसे?
आपको दूसरा चश्मा ला कर दे दूंगी.
मगर दूसरा चश्मा कहां से लाओगी?
बाजार से.
मगर बाजार से कैसे लाओगी?
पैसे दे कर.
पैसे कहां से आयेंगे?
आप से.
© PRAN'S FEATURES


इंजीनियर
अरे पिंकी, कहां जा रही है?
इस चूहे को कहीं छोड़ने जा रही हूं.
दूर छोड़ कर आना, ताकि यह फिर कहीं लौट कर न आ जाये.
इंजीनियर साहब, क्यों उदास बैठे हैं?
मुझे इस तार को पाइप के इस सिरे में डाल कर उस सिरे से निकालना है. यह काम मुझ से हो नहीं रहा.
यह तो बड़ा आसान है. आप इस चूहे की पूंछ से तार का सिरा बांध दीजिये.
लो, बांध दिया.
अब मैं चूहे को पाइप में छोड़ देती हूं.
इंजीनियर साहब, दौड़ो! चूहा पाइप के उस सिरे की तरफ भाग रहा है.
वाह! चूहा आ गया और उसके साथ तार भी.
अब चूहे को खोल कर छोड़ दो!


अखबार
दादाजी! आप कुछ परेशान नजर आ रहे हैं?
हॉकर आज मेरा अखबार नहीं फेंक कर गया.
तो इसमें परेशान होने की क्या बात है?
तुम नहीं जानती चिंकी! अगर सुबह अखबार न मिले तो मुझे बेचैनी होती है.
लगता है, मेरी दिनचर्या में से कुछ खो गया है. जिस दिन अखबार न मिले, ठीक से खाना भी हज़म नहीं होता.
दादाजी! क्या अखबार और कहीं से नहीं मिल सकता?
मिल सकता है, बाजार से.


चिंकी! यह लो पैसे. अगर तू बाजार से मुझे अखबार ला देगी तो मैं तुझे यह टॉफी दूंगा.
अभी लाई.
दादाजी, यह रहा अखबार.
शाबाश! यह रही टॉफी.
चिंकी! बाजार तो दूर है. पर तू अखबार ले कर इतनी जल्दी कैसे आ गई?
रद्दी वाला पास ही मिल गया था.
क्या? दो महीने पुराना अखबार!
© PRAN'S FEATURES


हर हर गंगे
खाना तैयार है.
मैं नहाकर आता हूँ फिर खाऊंगा.
अरे! नल चला गया?
बाहर हैंड पम्प पर जाकर नहा लो.
अरे हैंड पम्प टूटा पड़ा है?
कोई बात नहीं, मैं कुएं पर जाकर नहा लेता हूँ.


ओह! कुआं सूखा पड़ा है.
अरे, मिल गया पानी! पिंकी पानी की बाल्टी छोड़कर अंदर जा रही है.
इस से पहले कि पिंकी बाहर आए, मैं इस बाल्टी के पानी से नहा लेता हूँ.
हर-हर गंगे
झपटजी! यह क्या किया आपने? इस बाल्टी में मैंने होली के लिए रंग घोला था.



बकरी और ठग
रोशू !
हां, भोलू !
क्यों न हम उस लड़की से बकरी हथिया लें ?
ख्याल अच्छा है, बकरी कम से कम पांच सौ रुपए में बिकेगी.
देखो ! तुम्हारे लिए यह किताब लाए हैं. इस में परियों की मनोरंजक कहानियां हैं.
परियों की कहानियां ? वाह !



ज़रा यह बकरी पकड़ना.
वाह ! इस में तो सचमुच बड़ी मनोरंजक कहानियां हैं.
तरकीब कामयाब रही.
जब तक वह कहानियां पढ़ती है, बकरी लेकर नौ दो ग्यारह हो जाओ.
मेरी बकरी लेकर कहां जा रहे हो ?
पिंकी को मैंने इसे घास चराने के लिए दिया था.


दादाजी का फूलदान
ओह: मेरा यह कीमती फूलदान ! अगर पिंकी यहां आ गई तो वह इसे गिराकर तोड़ देगी.
इसको कहां रखा जाए कि जहां पिंकी का हाथ न पहुंचे.
हां, इस अलमारी के ऊपर इसको रख दिया जाए.
इस अलमारी के ऊपर तक पहुंचने के लिए तो मुझे भी स्टूल की जरूरत पड़ेगी.


यहां तक पिंकी का हाथ नहीं पहुंचेगा और फूलदान टूटने से बचा रहेगा.
दादाजी!
ओह!
पिंकी ! तुमने मेरा प्यारा फूलदान तोड़ दिया !
कमाल है, मैं तो घर के अंदर ही नहीं घुसी.



कार्टूनिस्ट प्राण का जन्म कसूर नामक कस्बे में, जो अब पाकिस्तान में है, हुआ था। एम.ए. (राजनीति शास्त्र) और फाइन आर्ट्स का अध्ययन करने के बाद उनका कार्टूनिंग कैरियर 1960 में दैनिक मिलाप से शुरू हुआ।

उन दिनों यहाँ भारत में विदेशी कॉमिक्स छपती थीं। प्राण ने भारतीय पात्रों की रचना करके स्थानीय विषयों पर कॉमिक्स बनाना शुरू किया। उनके प्रमुख पात्र हैं - चाचा चौधरी, साबू, श्रीमतीजी, पिंकी, बिल्लू और रमन।

[illegible] 1995 में [illegible] ... अमेरिका में स्थायी रूप से रखा गया है। 1983 में स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्राण की राष्ट्रीय एकता पर बनी कॉमिक्स "रमन-हम एक हैं" का विमोचन किया।

प्राण के पात्रों की लोकप्रियता का रहस्य है कि वे सीधे सरल ढंग द्वारा पाठकों को भीतर तक गुदगुदा देते हैं।

प्रकाशक



Printed and Published by Gulshan Rai on behalf of Diamond Comics, 257, Dariba Kalan, Delhi-6 & Printed at Jain Offset Printers, 3864, Chali Puri, Kinari Bazar, Delhi-110006
Editor : Gulshan Rai
RNI No.: 39423/81


ओहह!
शंटू! कहीं और जाकर पटाखे चलाओ! इनकी आवाज से संगीत में खलल पड़ता है.
वह मैं नहीं कर सकता.
मैं सार्वजनिक सड़क पर पटाखे चला रहा हूं. तुम्हारे घर के अंदर नहीं.
वाह! मजा आ गया!


यह एटम बम बड़ा पॉवरफुल है. इसके धमाके से पिंकी ट्रांजिस्टर लेकर कहीं भाग जायेगी.
??
तुमने मेरा बम क्यों भिगो दिया?
मैंने पानी सार्वजनिक सड़क पर फेंका था.



पिंकी और बप्पन
पिंकी! यह मुर्गी कहां से आई?
अरे? कहां गई मुर्गी?
मैं उसे ढूंढकर लाती हूं.
कितने अंडे दिए इसने?
अरे कल ही तो खरीदी है इसे.
कब का अंडा?
और आज का अंडा?
यह अंडा मेरा है.


क्यों ?
क्योंकि यह मेरी मुर्गी ने दिया है. इसलिए यह मेरा है.
यह अंडा मुर्गी ने मेरे अहाते में दिया है. इसलिए यह मेरा है.
ठीक है. मैं अपनी मुर्गी लिए जाती हूं. कल यह और अंडा दे देगी.


ओह !
डोर टूट गई !
पतंग नीचे आ रही है. वह जल्दी ही मेरे हाथ में होगी.
पिंकी! यह मेरी पतंग है!


पतंग मेरे अहाते में गिरी है, इसलिए यह मेरी है. बन्टू! आओ, अपना रास्ता नापो
मीनू! कहां जा रही हो?
पिंकी! मेरे पास डोर है, मगर पतंग नहीं. कहीं से पतंग मिल जाए तो आज भी उड़ाया जाए.
मेरी पतंग, तुम्हारी डोर. आओ हम दोनों मिलकर उड़ाएं.
वाह!
छोड़ो! देखो, अभी यह आसमान में जाती है.


पतंग दूर बहुत दूर जा रही है.
यह वही पतंग है. मैं लंगर डालकर इसे नीचे ले आता हूं.
अब यह पतंग फिर मेरी हो ही गई.
धड़ाक
गणेशी आया! इसे दूर तक खदेड़ कर आना.


थोड़ी देर बाद...
पकड़ लिया !
धप्प पप


यह मेरी मुर्गी है. पिंकी की मुर्गी उसके पास है.
गणेशी! मुझे बख्शा दो!
मैं तुम्हारे पांव पड़ता हूं.


मर्तबान
पिंकी! हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप क्यों बैठी हो?
जम्बू! मम्मी पापा बाहर गए हैं..
मम्मी ने कहा था कि उनके लौटने पर घर की कोई चीज़ उन्हें टूटी हुई नहीं मिलनी चाहिए.
इसका मतलब है कि हम भाग दौड़ नहीं सकते. टकराकर किसी चीज़ के टूटने का डर है.
लेकिन हम बैठकर कुछ खा पी तो सकते हैं?
मेरा मन कुछ खाने को कर रहा है.
कर तो मेरा भी रहा है.
पर समस्या यह है कि मम्मी पापा देर से लौटेंगे और घर में कोई चीज़ खाने के लिए नहीं है.


किचन में चलते हैं, वहाँ कुछ न कुछ खाने को जरूर मिल जाएगा.
रेफ्रिजिरेटर नहीं खुल रहा है, शायद मम्मी इसका ताला बंद कर गई हैं.
देखो, यह मर्तबान रखा है, इसमें जरूर कुछ न कुछ खाने को रखा होगा.
मर गए.
क्या हुआ? पिंकी!
मेरा हाथ मर्तबान में फँस गया है. बाहर नहीं निकल रहा.
घबराओ नहीं. मैं मर्तबान को अपनी तरफ खींचता हूँ. तुम हाथ को अपनी तरफ खींचो. इस तरह तुम आज़ाद हो जाओगी.



खींचो !
मेरा बाजू दर्द करने लगा है!
यह तरीका ठीक नहीं, कोई और रास्ता ढूंढो.
मसरजी के पास जाते हैं, वह मिनटों में तुम्हारा हाथ निकाल बाहर करेंगे.
लेकिन रास्ते में कोई मेरा हाथ मर्तबान में फंसा देखेंगे तो हंसेंगे. मेरी बेइज्जती होगी.
तुम्हारे बाजू पर यह पट्टी लपेट देता हूं. अब यह देखने में अजीब नहीं लगेगा. चोट तो अक्सर लोगों को लगती रहती हैं.
अच्छे.
यह हाथ बहुत भारी लग रहा है, पता नहीं इस मर्तबान से कब छुटकारा मिलेगा?



अरे पिंकी! तुम्हारे हाथ को क्या हो गया है?
ताई! मैं गिर गई थी चोट आ गई है.
मुसीबत में पड़ गई, ईश्वर इसे जल्दी आराम दे.
अरे पिंकी? यह क्या?
घबराइए नहीं, मसरजी! यह वह नहीं जो आप समझ रहे हैं.
दरअसल, मेरा हाथ इस मर्तबान में फंस गया है. इसे निकालने में आपकी मदद लेने आई हूं.
तुम हमेशा कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर देती हो.
यहीं ठहरो. मैं अंदर से तेल लाता हूं.
तेल की चंद बूंदें डालने से हाथ मुलायम हो जाएगा, और मर्तबान फिसल कर अपने आप ही आ जाएगा.


ओह!


नहीं ?


गेंद को मत छुओ!


हा! हा!
साबू?


काठमंडू में छुट्टियां
ट्रिन
ट्रिन
लो भई! काठमंडू जाने के लिए हमारी सीटें बुक हो गई हैं. उसी के बारे में सूचना थी.
पापाजी! हम काठमंडू क्यों जा रहे हैं?
?
वहां पहाड़ हैं. कुछ दिन वहां रहेंगे.


सामान डिक्की में रख देते हैं. उम्मीद है, समय पर हम हवाई अड्डे पहुंच जाएंगे.
हवाई अड्डा ज्यादा दूर नहीं है.
हमने ठीक समय पर पहुंचकर प्लेन पकड़ ली.
पापाजी ! नीचे आदमी और पेड़ पौधे कितने छोटे नज़र आ रहे हैं ?
लो, हम काठमांडू पहुंच गए. यहां कितना अच्छा मौसम है. कितना मनमोहक दृश्य है ?


होटल की खिड़की का पर्दा हटाओ और बर्फीले पहाड़ों की चोटियां देख लो.
मम्मी, मैं बाहर खेलने जाऊं ?
यह समोसा लेती जाओ. काफी समय हो गया है भूख लग आई होगी.
देखूं यहां खेलने के लिए कोई साथी मिलता है या नहीं ?
ओह ! पहाड़ी बकरा मुझे मारने आ रहा है.
बाप रे ! भागो !
क्लिक !
पहाड़ों का अच्छा दृश्य है. फोटो ले लेना चाहिए.


धड़ाक!
ओह! मेरा कैमरा! कैसे टूट गया!
एक कैमरे के लिए रो रहे हैं? मैंने सुना है कि विदेशी टूरिस्ट बड़े अमीर होते हैं?
दो महीने हिंदुस्तान घूमकर सारी ऐतिहासिक और सुन्दर जगहों के फोटो लिए थे. अपने देश ले जाना चाहता था, पूरी फिल्म एक्सपोज़ हो गई. अब मुझे फिर से दोबारा सारी जगह घूमना पड़ेगा और फोटो लेने पड़ेंगे.


मुझे अफ़सोस है कि आपकी सारी मेहनत बर्बाद हो गई... बाय!
इससे पहले कि कहीं कोई और पहाड़ी बकरा सामने न आ जाए, सुरक्षित होटल में लौट जाना बेहतर है.
पिंकी! तुम ठीक समय पर लौट आईं. दोपहर का खाना आ गया है. सब मिलकर खाएंगे.
अरे, मुझे याद आया बेचारा टोनी भूखा होगा?
अगर तुम्हारा टोनी कहीं आसपास है तो उसे बुला लो. वह भी हमारे साथ बैठकर खाना खा लेगा.
नहीं! टोनी यहाँ नहीं, वह दिल्ली रह गया.
तो उसकी माँ ने उसे खाना खिला दिया होगा. तुम क्यों उसकी फ़िक्र करती हो?


टोनी एक विलायती नस्ल का है. उसे मैं अपने दोस्त मीठू से थोड़ी देर खेलने के लिए लाई थी. पीछे दिल्ली हमारे घर में छूट गया है वह.
क्या?
हमारा यहाँ काठमांडू में रहने का पंद्रह दिन का प्रोग्राम है. हम पीछे घर में ताला लगा आए हैं.
इन दिनों वह कुत्ता भूखा प्यासा मर जाएगा. हमें फौरन दिल्ली लौटना चाहिए.
जनाब! आप आज आए और आज ही वापस जा रहे हैं? क्या यहाँ की जलवायु माफिक नहीं आई?
CASH
शुक्र है. दिल्ली की फ्लाइट मिल गई.
23


हम दिल्ली वापस आ गए.
घर कब पहुंचेंगे?
टैक्सी तेज चलाओ.
अभी टैक्सी से सामान उतारना है.
वह बाद में उतारेंगे. पहले ताला खोलो और कुत्ते को बाहर निकालो.
टोनी!
टोनी!
कहीं दिखाई नहीं देता.
कहीं हमारे पहुंचने में देर तो नहीं हो गई? कहीं वह कुत्ता मर तो नहीं गया?
पापाजी! वह रहा टोनी, अपने मालिक मीठू के पास.
तुम्हारे गुसलखाने की खिड़की खुली थी. तुम्हारे जाने के बाद उसमें से कूदकर यह बाहर आ गया.
24


जोखम का धंधा
अख़बार!
आज अखबार बड़ी देर से लाए हो?
क्या करूं, पिंकी! मुझे दूर दूर तक अखबार बांटने जाना पड़ता है.
सवेरे पांच बजे बिना खाए पीए मैं घर से निकलता हूं. सैंटर से अखबार लेता हूं और बांटने निकल पड़ता हूं. हफ्ते में कोई छुट्टी नहीं.
तुम अगर कोई असिस्टेंट रख लो, तो तुम्हारा काम काफी हलका हो जाए.
क्यों मजाक करती हो? एक हॉकर का असिस्टेंट बनना कौन चाहेगा?
क्यों? मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूं.
तुम? अगर तुम अखबार बांटने में मेरी मदद करोगी तो मैं तुम्हें हर रोज जेब खर्च दिया करूंगा.


मंजूर है. मैं दादाजी को अखबार देकर आती हूं.
लाओ, कुछ अखबार आज मैं तुम्हारे बांट देती हूं.
लो, मकान नं. A84 में इंडियन एक्सप्रेस, A53 में हिन्दुस्तान टाइम्स, A12 में स्टेट्समैन, A24 टाइम्स ऑफ इंडिया, A76 में पैट्रियट, A88 में ट्रिब्यून.
A89 में नवभारत टाइम्स, A32 में जनसत्ता, B73 में हिन्दुस्तान, B125 में हिन्दू......, B11 में पंजाब केसरी.....
समझ गई?
फिक्र न करो, अखबार बांटकर मैं आई.
मैं मार्केट के पास मिलूंगा, अखबार बांटने के बाद आ जाना.


यह गया इंडियन एक्सप्रेस....
टाइम्स ऑफ इंडिया.
स्टेट्समैन तो चौथी मंजिल पर डालना है. सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते दम निकल गया. अखबार फेंकना इतना आसान नहीं जितना मैं समझती थी.
यह गया एक और अखबार.
बस, अब अभी अखबार डालना रह गया है. इसके बाद काम खत्म.
भौं! भौं!


भौं! भौं!
मुझे पता नहीं था कि यह जोखम भी उठाने पड़ते हैं.
अरे पिंकी! बड़ी जल्दी आ गई तू?
यह शेर राय बहादुर साहब के कुत्ते का कमाल है.
ये सब लोग हमारी तरफ क्यों आ रहे हैं?
इन्हें अखबार जल्दी मिल गया है न? इस वजह से हमारी पीठ थपकने आए हैं.
इनके तेवरों से लगता है कि ये हमारी पीठ नहीं, सर ठोकने आ रहे हैं.
संभालो अपना अखबार! और कल से अखबार बंद!
मेरा भी अखबार बंद!
मेरा भी!
मेरा भी!
मामला क्या है?
मैं जनसत्ता लेता हूं मगर तुमने मेरे यहां स्टेट्समैन डाल दिया.
मैं टाइम्स ऑफ इंडिया पढ़ता हूं. तुमने मेरे यहां नवभारत टाइम्स डाल दिया.
मेरे यहां भी गलत अखबार डाला गया!


ओह! मेरा साइकिल बैलेंस बिगड़ गया!
इतने बड़े आदमी क्या रोते हैं?
ओह मेरा नुकसान हो गया और मैं रोऊँ भी नहीं?
क्या मैं तुम्हारा नुकसान पूरा कर सकती हूँ? मुझे कोई दूसरा काम दे दो.
हाँ, एक काम है, ये पत्रिकाएँ बची हैं, इन्हें बेचने में तुम मेरी मदद कर सकती हो.
इस फुटपाथ पर मैं इन पत्रिकाओं को सजा देता हूँ, हर पत्रिका पर कीमत छपी है, जो ग्राहक आए, उससे छपी कीमत लेकर उसे पत्रिका दे देना.


इस काम में गलती होने की गुंजाइश नहीं, पत्रिका का नाम मुख पृष्ठ पर छपा है, इतना तो तुम पढ़ सकती हो?
क्यों नहीं? यह इलस्ट्रेटेड वीकली है, यह धर्मयुग है, और यह रहा पराग...
ठीक!
अच्छा, मैं घर से नाश्ता करके आता हूँ, तब तक उम्मीद है तुम कुछ कमाई कर सकोगी.
बेफिक्र होकर जाओ, इसमें गलती नहीं होगी.
अहा! बिकने से पहले अगर मैं इस पत्रिका में से एक कहानी पढ़ लूँ तो क्या कम हो जाएगा?
वाह! क्या मनोरंजक कहानी है?
एक 'धर्मयुग' देना.
थोड़ी देर बाद आना, मैं कहानी बीच में नहीं छोड़ सकती.


एक 'इंडिया टुडे' देना....
अजीब दुकानदार है? मैं दूसरी जगह से खरीद लूंगा.
-तभी उस तालाब के पास एक साधु आया जिसकी दाढ़ी उसके पांव छू रही थी...."
ऐ! एक फिल्मी मैगज़ीन देना!
"...ज्योंही साधु तालाब में पानी पीने के लिए झुका तो मेंढक बना राजकुमार उसके पास आकर बोलने लगा, "तुम मुझे कोई राजकुमार लगते हो." साधु ने कहा, आपने ठीक पहचाना महाराज" और राजकुमार ने अपनी कहानी सुनाई.


ऐ लड़की! मुझे पढ़ने के लिए फिल्मी मैगज़ीन चाहिए.
क्या यह तुम्हारा माल बेच रही है?
तुम्हें मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा.


घड़ी की गारंटी
तुम यहां क्यों आयीं?
झपटजी! आपने मिलने के लिए एप्वाइंटमेंट दिया था
मैंने एप्वाइंटमेंट सवा सात का दिया था. जबकि तुम सात बजे ही आ धमकीं? देखो घड़ी!
मैं अपने घर से समय देखकर चली थी.


पिंकी! ठीक समय पर आयी है. टी.वी. की घड़ी सवा सात का टाइम बता रही है.
7.15
यह क्लॉक खराब है. एक साल पहले इसे खरीदा था.
जो घड़ी सही टाइम न दे उसे कूड़े में फेंकना चाहिए.
रुको! इसका गारंटी कार्ड होगा?
यह रहा उसका गारंटी कार्ड?
हम खराब क्लॉक दुकानदार को वापस करके, अपने पैसे वापस ले सकते हैं.


लेकिन एक साल की गारंटी का पीरियड आज पूरा होता है.
दुकान 7.30 पर बंद होती है. हमारे पास 15 मिनट्स हैं. हम जाकर दुकानदार से म्हेग ले सकते हैं.
तो फिर जल्दी चलो!
दुकान बंद होने से पहले हमें वहां पहुंचना है वर्ना गारंटी पीरियड खत्म हो जायेगा.
सम्भलकर. आगे स्पीड ब्रेकर है.
ओहह! ब्रेक लगाने में देर हो गयी!


कड़ाक!
मेरी कार में डेंट पड़ गया!
चलते रहो! वर्ना दुकान बंद हो जायेगी.
आज मुर्गियों ने काफी अंडे दिए हैं.
मैं तुम्हें देख लूंगा.


मुझे अफसोस है कि उसके अंडे टूट गये.
आगे देखो!
रैड लाइट!
झपटजी! तुम्हें रैड लाइट पर रुकना चाहिए था.
कहीं घड़ियों की दुकान बंद न हो जाये.
ट्रैफिक पुलिस इंस्पेक्टर हमें रुकने के लिए इशारा कर रहा है.


तुम चौराहे की रैड लाइट पर रुके नहीं. जुर्माना 1000/- रुपये.
घड़ियों की दुकान नजदीक है. सम्भलकर ड्राइव करो.
Watches
श्रीमान! यह क्लॉक गारंटी पीरियड के अंदर खराब हो गया.
कोई बात नहीं, यह रहे आपके सौ रुपये.
धन्यवाद.
आपको खराब घड़ी के पैसे वापस मिल गये. फिर भी आप खुश नहीं?
सौ रुपये के लिए मुझे एक हजार रुपया जुर्माना देना पड़ा और कार में टूट पड़ा वह अलग.


पिंकी की नाव
प्रा०।
बारिश आ गयी!
गर्मी दूर हो जायेगी.
बिजली चमकी!
पेड़ पौधों के पत्ते हरे भरे हो जायेंगे.
मैं नाव चलाती हूं.
© PRAN'S FEATURES


मेरी नाव दूर जा रही है.
हा! हा!!
मम्मी! देखो, वह क्या चीज मेरी नाव की तरफ बढ़ रही है?
वह एक चूहा है जो डूबने से बचना चाहता है.
मुझे बरसात में जाकर चूहे को बचाना चाहिए.
वह मेरी नाव पर सवार हो गया!


वह बड़े मज़े से सैर कर रहा है.
ओह ह! एक नाव और चूहे दोनों को कुचल देगा.
शुक्र है, दोनों सही सलामत निकल आये.
नाव उसे दूर...और दूर लिए जा रही है.


ओह ह! एक खूंखार बिल्लौटा नन्हें चूहे की तरफ लपक रहा है.
सत्यानाश! लकड़ी ने नाव की गति रोक दी।-- अब क्या होगा? -- बिल्लौटा
बिल्लौटा सड़क के खुले मेनहोल में गिर गया.
HOTEL
वह बच गया. नाव फिर से आगे बढ़ने लगी.
जब तक वह अपने घर सुरक्षित न पहुंच जाये, मुझे उसके पीछे जाना चाहिए.


ओह! चील उस पर झपटने के लिए आ रही है.
?!!
गर्र र र!
बाऊ! बाऊ!!
फिर मुसीबत?
मौके पर कुत्ते ने आकर चील को भगा दिया.


?!!
गर्र!
अब नन्हें चूहे को कुत्ता खा जाना चाहता है.
बाऊ! बाऊ!!
छलांग!
??
बारिश रुक गयी. मुझे भी अपने घर लौटना चाहिए.


कौआ और कुटकुट
कुटकुट, रुको! तुम बड़ी नटखट हो गयी हो.
मैं तुमसे बहुत परेशान हो चुकी हूं. अगर तुमने मुझे और परेशान किया तो मैं तुम्हें किसी लकड़हारे को दे आऊंगी.
जानवर पालना एक मुसीबत है.
तुम ठीक कहती हो, पिंकी!
© PRAN'S FEATURES


साकी! क्या तुमने भी कोई पक्षी या जानवर पाला है?
हां!
क्या है वह?
अंदर आओ, दिखाता हूं.
कौआ?
हां. इसे पालने में क्या बुराई है?
जिस तरह लोग तोता और कबूतर पालते हैं, उसी तरह यह भी एक पक्षी है.
साकी! अगर हम एक दिन के लिए पालतू जानवर और पक्षी बदल लें तो कैसा रहेगा?


बहुत अच्छा आइडिया है. मैं बिना पैसे खर्चे एक जानवर रख सकूंगा और तुम एक पक्षी.
लो, इसे सम्भालो !
यह पक्षी पिंजरे में बंद है. मुझे कहीं भागना नहीं पड़ेगा जैसे गिलहरी मुझे भगाती है.
कांव ! कांव !!
यह क्या मुसीबत है ?
दादाजी ! एक दिन के लिए मैं घर में कौवा लायी हूं.
तब मुझे आज का दिन कहीं और जाकर बिताना होगा.
कांव ! कांव !


पड़ोस में
कांव ! कांव !!
कौवे की आवाज पिंकी के घर से आ रही है.
ओह ! टी. वी. के गाने का मजा जाता रहा.
कांव ! कांव !
यह आवाज बंद करानी होगी वर्ना फिल्मी गानों का मजा जाता रहेगा.
छड़ाक
?!
अगर दोबारा कांव ! कांव !! हुई तो घर के सारे शीशे टूट जायेंगे.
भलाई इसी में है कि पक्षी को वापस कर आऊं.


पिंकी ! तुम पक्षी को बड़ी जल्दी वापस ले आयीं ?
आंटी ! मैं अपना और नुकसान नहीं कराना चाहती.
क्वांव! क्वांव!
इसकी वजह से जो खिड़की का शीशा टूटा है उसके निकालो सौ रुपये.
क्वांव! क्वांव!
तब तुम मुझे तीन सौ रुपये दो.
वह किस लिए?
तुम्हारी गिलहरी ने मेरे किचन की क्राकरी तोड़ दी और दूध फैला दिया.
घर चलो!


शीरीं का कमाल
पिंकी, तुम्हारे घर में वीडियो गेम्स हैं ?
हैं। शीरीं, मगर बिजली नहीं है.
लूडो ? झूला ? रस्सी कूदना वगैरा दूसरे खेल ?
मुझे इन में कोई दिलचस्पी नहीं.
चोर-सिपाही?
हां, वह ठीक रहेगा. मुझे चोर बनना पसंद है.
© PRAN'S FEATURES


चोर मुझे बनने दो.
नहीं, श्रीटी! अगर मेरे साथ खेलना है तो तुम्हें पुलिस बनना होगा.
ठीक है.
मैं छुपती हूं. तुम मुझे पकड़ने आना.
धन्नो ताई! खेल में मैं चोर हूं. क्या मैं तुम्हारे घर में छुप सकती हूं.
यह शरीफों का घर है. मैं चोर-उचक्कों को घुसने नहीं देती.
मैं किसी के घर की बजाय पार्क में जा छुपती हूं.


यह घनी झाड़ी छुपने के लिए उपयुक्त है.
तुम??
मैं चोर हूं. पुलिस के डर से यहां छुपा बैठा हूं.
क्या मेरी तरह तुम भी खेल खेल रहे हो?
मैं असली चोर हूं. समझीं?
तुम भी पुलिस से छुपे हो और मैं भी. हम दोनों भाई-बहन हुए या नहीं?
ओहह-फफो! मेरा सिर मत खाओ और यहां से चलती बनो.


क्यों?? जब तुम झाड़ी में छुप सकते हो तो मैं क्यों नहीं?
धीरे बोलो! तुम्हारी आवाज़ अगर किसी ने सुन ली तो पुलिस आ जायेगी.
जितना तुम्हें पकड़े जाने का डर है उतना ही मुझे भी.
उफ़ फ़! क्या मुसीबत है?
धीरे बोलो!
तुम धीरे बोलो!
तुम!
तुम!!
चुप! अगर एक शब्द भी निकाला तो मैं तुम्हें मार डालूंगा.


उस झाड़ी के पत्ते हिल रहे हैं. पिंकी उसके पीछे छुपी होगी.
उसे छोड़ो! पिंकी मेरी चोर है.
खबरदार! आगे न बढ़ना.
जानते नहीं मैं पुलिस हूं.
चलो!
मुझे इस चोर की कई दिनों से तलाश थी.
अरे! क्या तुम्हें पिस्तौल चलानी आती है?
कैसी पिस्तौल?... यह खिलौना है.


चम्पू की नेकटाई
चम्पू! कहां जा रहे हो?
पिंकी! रघु के यहां पार्टी है, जहां ऊंचे लोग आयेंगे. मैं वहां जा रहा हूं.
हम हिन्दुस्तानियों में एक कमी है. विदेशियों की नकल करते हैं मगर अधूरी.
तुम्हें कोट-पैंट के साथ नेकटाई भी लगानी चाहिए.
मैं घर जाता हूं और टाई पहनकर आता हूं.
© PRAN'S FEATURES


कहो कैसा लग रहा हूं?
हा! हा!! अब लोग तुम पर ज्यादा हंसेंगे. तुम्हारी टाई बहुत लम्बी है.
यह मेरे पिताजी की है.
इसे छोटा करना होगा.
कैसे?
यह काम मुझ पर छोड़ दो. मैं जाकर कैंची लाती हूं.
अप्पटजी! क्या थोड़ी देर के लिए आप कैंची दे सकते हैं?


शाम को आकर लेना. देखती नहीं इस वक्त कैंची खाली नहीं है.
इसकी अभी जरूरत है.
अगर तुम कैंची ले गयीं तो मैं बाढ़ किससे काटूंगा?
मुझे यह सिर्फ पांच मिनट के लिए चाहिए.
काम होते ही मैं इसे लौटा जाऊंगी.
ठीक है.
धन्यवाद! झपटजी!


चम्पू, मैं कैंची ले आयी. नेकटाई आगे करो!
कटटट!
पिंकी! तुमने यह क्या किया? अब यह बहुत छोटी हो गयी है!
एक काम करो, ऊपर से कुराई लो!
टाइम कम है. मुझे रघु की पार्टी में जल्दी पहुंचना चाहिए.


लगता है सब लोग पार्टी में पहुंच चुके हैं.
हो! हो!! चम्पू, क्या तुमने टाई अजायबघर से ली है?
ही! ही!! मैं हंसी नहीं रोक सकता.
बड़ी घटिया है.
क्या कोई देसी टाई पहनता है?
हां!! कई प्रतिष्ठित व्यक्ति देसी टाई पहनते हैं.
कहां?
कहां?
वह देखो, वकील और जज.


गपशप
पिंकी! खाना तैयार है. खा लो.
मम्मी! मैं नीरा दीदी के यहां गपशप करने जा रही हूं.
चटपटी गप्पें मारने का अपना आनंद है.
नीरा दीदी! क्या आप घर में हैं?
© PRAN'S FEATURES


दरवाजा खोलो!
सम्राट अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई की. घमासान युद्ध हुआ—
दीदी! कुछ देर बैठ कर गपशप करें
नहीं, इस वक्त मैं पढ़ रही हूं.
तुम सारा दिन क्या पढ़ती हो?
इतिहास.
अर्थात् मुर्दा सम्राटों की कहानियां? जिनको मरे सैकड़ों वर्ष बीत गये. उन्हें याद करने से क्या फायदा? जिन्दा से चटपटी बातें करो.
नहीं!—जाओ, मेरी कल परीक्षा है.
नाराज मत होओ! मैं जाती हूं.


मुझे किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाना चाहिए जो कॉलेज की पढ़ाई खत्म कर चुका हो.
वी.नंदा एडवोकेट
क्या वकील साहब हैं?
हां, अंदर आ जाओ!
वकील साहब! बैठ कर चटपटी बातें करें.
नहीं पिंकी! इस वक्त मैं कानून की किताब पढ़ रहा हूं.
आपकी पढ़ाई-लिखाई तो कब की खत्म हो चुकी है?
लेकिन एक मुकदमे में कल कोर्ट में मुझे बहस करनी है.
TAILORS
वोट
मुझे किसी वकील के पास भी नहीं जाना चाहिए था.


पंडित जी! क्या आपके पास कुछ देर बैठकर बातें करने की फुर्सत है?
नहीं, मैं पढ़ रहा हूं.
क्या?
रामायण!
अजीब बात है. हर कोई कुछ न कुछ पढ़ने में लगा है?
ज्योतिषीजी! आपके हाथ में कोई किताब नहीं है?
लेकिन पिंकी मैं पढ़ने में व्यस्त हूं.
आप क्या पढ़ रहे हैं?
हाथ की रेखाएं!


पिंकी! मेरे पास आओ. कुछ देर गपशप करें.
ढोलू! तुम कहीं व्यस्त तो नहीं?
खाली बैठा बोर हो रहा हूं.
अजीब संयोग है. यहां एक व्यक्ति है जो मुझसे खुद गप्पें मारने को उत्सुक है.
ओह ह! तुम्हारे बदन से बदबू आ रही है.
मैंने मच्छर भगाने की क्रीम मल रखी है.
तो फिर मैं भाग लूं. उस की गंध बर्दाश्त के बाहर है.


चमनलाल की हथौड़ी
रुकमणि ! यह तस्वीर ड्राइंगरूम में टांगनी है. हथौड़ी कहां है ?
दो हफ्ते पहले उसे बिशम्बर दास मांगकर ले गये थे. वह अभी तक उनके पास है.
कमबख्त लोग चीज मांगकर ले जाते हैं, फिर उसे लौटाते नहीं.
बिशम्बर दास ! मैं चमनलाल बोल रहा हूं. मुझे अपनी हथौड़ी चाहिए. अभी !
सॉरी ! मैं उसे लौटाना भूल गया. मैं उसे लेकर तुम्हारे घर आता हूं.
© PYARE FEATURES


दादाजी ! टी.वी. पर समाचारों का टाइम हो गया !
पिंकी ! मैं खबरें कैसे सुन सकता हूं ? मैं चमनलाल को उसकी हथौड़ी देने आ रहा हूं.
यह काम मैं कर देती हूं. आप टी.वी. पर खबरें सुनिये
-- अब आप दूरदर्शन पर आज के समाचार सुनिये.
चमन अंकल का घर अगले ब्लॉक में है. मैं उनको हथौड़ी देकर जल्दी लौट आऊंगी.


वाह! जिस चीज की मुझे जरूरत थी, पिंकी उसे लेकर आ रही है.
पिंटू! यह हथौड़ी मैं चमन अंकल को देने आ रही हूं.
अगर कुछ कीलें मैं अपनी मेज में ठोंक लूं, तो यह हथौड़ी घिस नहीं जायेगी. काम खत्म होते ही तुम इसे इसके मालिक को दे आना.
ठीक है.
अब मेरी मेज बनकर तैयार हो जायेगी.
पिंटू! तुम देर लगा रहे हो!
उधर.
बिशम्बर हथौड़ी लेकर अभी तक नहीं पहुंचा
कुछ देर इंतजार कर लो.


और कितना इंतजार करूं? एक घंटा हो गया है. लगता है बिशम्बर दास की नीयत बदल गयी है.
तुम खुद उसके घर जाकर औजार क्यों नहीं ले आते?
हां! यही ठीक रहेगा.
मैं जाता हूं.
अब बिशम्बर दास कोई बहाना नहीं बना सकता.
ठक! ठक!
पिंटू! देर हो रही है.
बस, मेज तैयार है. तुम हथौड़ी ले आ सकती हो.


चमन अंकल हमारे घर की तरफ आ रहे हैं.
जब तक अपनी हथौड़ी बिशम्बर दास से न ले लूं, मैं नहीं रूकूंगा.
यह रही वह!
टनन!
तुम अपनी हथौड़ी पाकर भी खुश नजर नहीं आ रहे?


डॉक्टर टॉपरॉक
भीकू! अभी टाइम कितना हुआ है?
दोपहर के एक बजने में पंद्रह मिनट बाकी हैं.
तब डॉक्टर टॉपरॉक का क्लीनिक अभी बंद नहीं हुआ होगा.
तुम्हारे घर के पास डॉक्टर मुखर्जी हैं, इनसे इलाज क्यों नहीं करातीं?
कुछ विशेष कारण है.
अपनी अपनी पसंद है.
© PRAN'S FEATURES


खैराती
अस्पताल
भीखू क्या जाने डॉक्टर टॉपरीक दवाई मुफ्त देता है.
डॉक्टर साहब! बुखार की दवाई चाहिए.
फिक्र न करो, पिंकी! ऐसी गोलियां दूंगा कि बुखार जल्दी उतर जायेगा.
लो!
गोलियां कम हैं. ज्यादा दीजिए.
और ले लो. लगता है, घर में दूसरे लोग भी बीमार होंगे.
कुटकुट! आओ, चलें.


शाम को.
कहिए साहब जी, पिंकी कैसी है?
वह घोड़े की तरह दौड़ रही है.
क्या उसे बुखार नहीं है?
डॉक्टर अंकल! मैंने गोलियां यह माला बनाने के लिए ली थीं.
यह लड़की है या शैतान?
दूसरे दिन.
पिंकी! कहां जा रही हो?
डॉक्टर टॉपरीक के दवाखाने.
डॉक्टर साहब! मेरा बुखार अभी नहीं उतरा. दवाई दो.


अगर मैं इसे गोलियां दूंगा तो वह उनकी माला बना लेगी.
तरल दवाई दे रहा हूं - इसे मरीज आसानी से पी सकता है.
यह क्या?
उम्मीद है, अब वह मुझे बेवकूफ बनाने नहीं आयेगी.
शाम को
जरा देखूं पिंकी के क्या हाल हैं?
?!
धन्यवाद डॉक्टर साहब! आपकी शीशी हेयरऑयल डालने के काम आ गयी है.


तीसरे दिन
पिंकी! कहां जा रही हो?
डॉक्टर टॉपरॉक के दवाखाने.
तुम?
बुखार अभी उतरा नहीं.
इस बार की दवाई से वह हमेशा के लिए भाग जायेगा.
तुम्हारा बुखार बड़ा हठी है. इंजेक्शन देना होगा.
यह क्या?
इंजेक्शन की जरूरत नहीं. मेरा बुखार उतर गया है!